भूमिका

20 वीं शती में पिछड़ी जाति का कोई हकदार या नेतृत्व करने वाला कोई नहीं था। अछूत कहा जाने वाला वर्ग हिंदू धर्म के प्रभाव में जीवन जी रहा था। हिंदू धर्म में रहकर हमेशा उनको विषमता में रहना पड़ता था। ऐसे समय में उनको अपना पथ प्रदर्शक के रूप में बाबासाहब डॉ. अंबेडकर मिले। उनके साथ रहकर लोग संघर्ष में कूद पड़े। अपने हक के लिए एवं समानता का व्यवहार करने के लिए उनको संघर्ष करना पड़ा। कालाराम मंदिर प्रवेश, महाड़ का चवदार तालाब का संघर्ष, पार्वती सत्याग्रह, अंबाबाई सत्याग्रह आदि कार्य के साथ लोग जुड़ गये थे।

अंग्रेजों के साथ लड़कर डॉ. अंबेडकर ने अपने लोगों का हक दिलवाये। संविधान लिखकर एवं कानून बनाकर मनुष्य मात्र को समता का अधिकार दिलाया, पिछड़ी जाति को कर्मकांड, देवी–देवता की चंगुल से निकाल दिया। 17 जुलाई, 1956 को बाबासाहब डॉ. अंबेडकर ने अपने निजी सचिव श्री नानक चन्द रत्तू से यह कहा था– *"मेरी जनता को यह बता दो कि जो कुछ मैने किया है वह अपने विरोधियों से लोहा लेकर और नाना प्रकार की कठिनाईयाँ और आपत्तियाँ सहन करके उन लोगों के लिए प्राप्त किया हैं। बहुत कठिनाईयों से मैने काफिले को जहां वह इस समय लाया हूँ, मेरे पश्चात यह रूकने न पाए। रूकावटों के बावजूद इसे आगे ही आगे बढ़ता रहना चाहिए। यदि मेरे लोग इस काफिले को आगे न बढ़ा पाएं तो वे इसे जहां यह है वहीं ठहरने दे। परिस्थितियाँ कैसी भी हों पर उन्हें इस काफिले को पिछे नहीं जाने देना चाहिए, यह मेरी उन्हें नसीहत हैं।"*[1]

[1] पाटील, कृष्णकांत, संपादक, समता सैनिक की घटना, नागपूर : 1973.

बाबासाहब डॉ. अंबेडकर का सन् 1956 में महापरिनिर्वाण होने से उनका कार्य आगे बढ़ाने के लिए उनके साथ रहने वाले प्रभावित कुछ अनुयायी आगे आये थे। सामाजिक और बौद्ध धर्म का विकास करने के लिए उन्होने 'दि भारतीय बौद्ध महासभा' स्थापित की गयी थी। राजनीति में प्रवेश करने के लिए 'रिपब्लिकन पार्टी' की स्थापना की थी। डॉ. अंबेडकर के महापरिनिर्वाण के बाद उनके साथ जो लोग थे उन्होने कार्य की जिम्मेदारी संभाली। आगे चलके युवा नेतृत्व भी सामने आकर नया अंबेडकरी आंदोलन उभकर आया था। इस अंबेडकरी आंदोलन का प्रभाव संपूर्ण भारतभर फैला गया। महाराष्ट्र में डॉ. अंबेडकर के अनुयायी अधिक होने से यह प्रभाव गॉव–गॉव में फैल चुका था। वर्धा जिले पर भी इसका प्रभाव अधिक रहा।

सन् 1956 से लेकर 1980 तक अंबेडकरी आंदोलन ने अधिक जोर पकड़ लिया। डॉ. अंबेडकर के संपर्क में अनेक अनुयायी थे। उनमें दादासाहब गायकवाड, बॅरिस्टर राजाभाऊ खोब्रागडे, दादासाहब रूपवते, यशवंतराव अंबेडकर, रा. सू. गवई, ना. ह. कुंभारे, शांताबाई दाणी, भागवत शित्रूजी बाभले, रेवाराम कवाडे, एड्वोकेट क. वी. उमरे जैसे लोगों ने अंबेडकरी आंदोलन को और गतिमान कर दिया था। वे नेता संपूर्ण महाराष्ट्र में घूमकर लोगों में प्रेरणा जगाते रहते थे। वर्धा जिले में भी नेता लोग आते थे। बाभले का घर आंदोलन का केंद्र बना था। धर्मांतर के बाद गॉव–गॉव में अन्याय अत्याचार बढ़े थे, सवर्ण लोगों ने दुकान से किराने का सामान देना बंद कर दिया, पानी भरने नहीं देते थे, खेती पर काम नहीं देते थे, लोगों का जीना मुश्किल हो गया था। वर्धा जिले के गॉव से अन्याय अत्याचार की खबर आते ही ये कार्यकर्ता वहॉ जाकर समस्या का हल निकालते थे। इससे लोगों में फैली हुई हिंदुओं की दहशत से छुटकारा मिलता था। तब रिपब्लिकन पार्टी का कार्य जोरों पर चल रहा था। यह पार्टी दूसरे स्थान पर थी

और विरोधी पार्टी बनकर कार्य कर रही थी। लोगों ने भी भरपूर साथ दिया था, लेकिन नेताओं के विभाजन से पार्टी भी समाप्ती की ओर चली गई।

सन् 1980 से लेकर 2005 तक नये नेता और कार्यकर्ता आगे आये। उन्होंने रिपब्लिकन पार्टी में काम करने के बजाय दूसरे पार्टी का गठन कर दिया। कांशीराम जी ने बी. एस. पी. पार्टी की स्थापना कर भरघोश यश संपादन करके पूरे देश में दूसरे नंबर पर रिपब्लिकन पार्टी का नाम आज के युवा़ को याद करा दिया। सिद्धार्थ पाटिल के प्रभावी भाषणों से वर्धा जिले पर भी इस पार्टी का दबदबा रहा।

इस काल के दरम्यान भी अनेक घटनाएं हुई की जिसका अंबेडकरी समाज पर गहरा असर हुआ। वर्धा जिले के तमाम लोगों ने अंबेडकरी आंदोलन क्या होता है इसका अन्य समाज को दर्शन करवाया था। नामांतर प्रकरण, हिंगणघाट का पुतला विटंबना, रिड़ल्स इन हिंदुइज्म, खैरलांजी प्रकरण, आदि घटनाओं से अंबेडकरवादी लोग प्रभावित हुए। मराठवाड़ा विद्यापीठ का नाम बाबासाहब डॉ. अंबेडकर के नाम पर करना था, क्योंकि बाबासाहब ने शिक्षा का रोपण औरंगाबाद में किया था। नागपुर से लेकर औरंगाबाद तक प्रा. जोगेन्द्र कवाडे ने 'लॉगमार्च' निकाला था। वर्धा जिले से गुजरते समय लोगों ने बहुत सहयोग दिया था। खैरलांजी घटना का निषेध करने के लिए बड़ी रैली निकाली गई थी। हिंगणघाट के पुतला विटंबना का निषेध किया गया था। तब वर्धा जिले से नये नेता उभरकर आये थे। बिंदा भगत, दिनेश सवाई, विजय आगलावे, देवली से दादा मून, लोखंडे बंधू, हिंगणघाट से अशोक बुरबुरे, पुलगांव से डोईफोड़े, नितनवरे बाबू, आर्वी से रंगारी आदी लोगों ने आंदोलन को आगे बढ़ाया। आज भी अंबेडकरी अनुयायीयों को सतर्कता बरतनी होगी की जातिवाद पूर्ण रूप से खत्म नही हुआ। अंबेडकरी आंदोलन चलाने के लिए किसी नेता की जरूरी नहीं ये बात खैरलांजी एवं भीमा–कोरेगांव की घटना ने याद करा दिया। अंबेडकरी आंदोलन

का शिक्षा में परिवर्तन दिखने शुरू हो गया था। बाबासाहब डॉ. अंबेडकरने शिक्षा पर अत्यधिक बल देकर कहा था, कि *'शिक्षा रूपी शेरनी का दूध जो पिएगा वह दहाड़ेगा।*[2]'' वर्धा जिले के अनेक कार्यकर्ताओं ने अच्छी शिक्षा पाई थी। इस कारण वे लोग सरकारी नौकरी प्राप्त कर सके और अपने बच्चों को भी अच्छी शिक्षा दे सके। इतनाही नहीं देहात के लड़के को शिक्षा की सुविधा नहीं थीं, उनको अंबेडकरी आंदोलन के सहभागियों ने औरंगाबाद के मिलिंद कॉलेज में भेजे थे। पढ़कर अनेक युवक नोकरी पर लगे हैं।

अंबेडकरी आंदोलन का सामाजिक और धार्मिक क्रांति में बदलाव दिखाई दे रहा हैं। बाबासाहब के विचार की ग्रंथसंपदा एवं बौद्ध धर्म पर भरपूर साहित्य उपलब्ध हो गया। गॉव–गॉव में सभायें, परीवर्तनवादी कार्यक्रमों जैसे कलापथक, नाटक, एकांकिका, नकला, भजन मंड़ल, कौव्वाली, किर्तन, सुगम गायन, आदि प्रबोधन का आयोजन होने लगे हैं। इससे पुराने संस्कार देवी–देवता, अंधश्रद्धा, रूढ़ि परंपरा को तोड़कर और हिंदूओं की जकड़न से मुक्त हो गये। अंबेडकरी आंदोलन की महत्वपूर्ण सफलता यह रही की अंबेडकरी आंदोलन से लोग बौद्ध धर्म की तरफ आकृष्ट हुए। बाबासाहब डॉ. अंबेडकर और बौद्ध धर्म यही वर्तमान में समीकरण बन गया। बुद्ध के साथ बाबासाहब का संबध पूरा जुड़ गया। प्रत्येक घर में बाबासाहब डॉ. अंबेडकर की प्रतिमा के साथ में बुद्ध की प्रतिमा भी रखी जाने लगी। प्रत्येक घर में बौद्ध धर्म पर जरूर किताब मिलेगा। डॉ. सुरजीत कुमार सिंह कहते है कि, *'नागपुर, चंद्रपुर और मुंबई में जितनी मिठाई नहीं बिकती उतनी वहॉ से किताबे अंबेडकरवादी लोगों द्वारा खरीदी जाती हैं।*[3] प्रत्येक गॉव शहर के नगर में बौद्ध विहार की स्थापना हो गई। सुबह–शाम वंदना चलती हैं। वर्धा में सुबह उठते ही वंदना सुनने को मिलती है, वंदना के अंतिम में भीम स्तुति का मधुर स्वर

[2] मुरार, एस. जे., अंधारातील दीपस्तंभ, संकलक, जयक्रांती, नागपूर : पंद्रह सं. 2015, पृ. 45.

[3] अरूण, ए.के., संपादक, युवा संवाद, लेख–अंबेडकर ने जगाई जीवन जीन की ललक, डॉ.सुरजीत कुमार सिंह (प्रभारी निदेशक, बौद्ध अध्ययन, डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन केंद्र, म.गां.अं.हि.वि.वर्धा), दिल्ली, विशेषांक, दिसंबर, 2017.

गुंजते रहता हैं। घर–घर में बौद्ध संस्कृति दिखाई देती हैं। सुंदर पूजा स्थान, बाबासाहब और बुद्ध के बड़े फोटो, दीवार पर अशोक चक्र, किसी घर पर बुद्ध के वचन या बाबासाहब का संदेश, घरोंको ऐतिहासिक नाम, घरोंपर पंचशील और निला झेंड़ा लहराता हुआ दिखता है, आवागमन साधनों पर बौद्ध निशान जरूर दिखता हैं।

वर्धा जिले में बौद्ध धर्म के विकास के लिए भरपूर खजाना मिला हैं। वर्धा से 25 कि. मी. केलझर में बौद्ध मूर्ति एवं अवशेष देखने हेतु लोग बौद्ध विहार का दर्शन करते हैं। कार्तिक पूर्णिमा पर हर साल बड़ा *बौद्ध महोत्सव* होता हैं। वर्धा से 30 कि. मी. बोरधरण में नैसर्गिक वातावरण में बौद्ध स्तूप एवं *मेडीटेशन* केंद्र बना हैं। वर्धा से 10 कि. मी. अंबोड़ा में *विपस्सना* केंद्र बना हैं। वर्धा से 35 कि. मी. पुलगांव में बाबासाहब के कर कमलों द्वारा बनाये गए बौद्ध विहार और सिद्धार्थ ग्रंथालय हैं। सेवाग्राम में बाबासाहब के पदस्पर्श के स्थान और बौद्ध विहार हैं। वर्धा में जापान द्वारा बनाया शांतीस्तूप हैं। इन स्थलों पर बौद्ध अनुयायी जाकर बौद्ध धर्म को जीवन में धारण करते हैं।

बाबासाहब द्वारा दिया हुआ बौद्ध धर्म के अनुसार अपना जीवन ढ़ालने के लिए लोग तत्पर हैं। अंधश्रद्धा, कर्मकांड़, यह बहुत पीछे छूट गया। अभी लोग आचरण की ओर बढ़ रहे हैं। बुद्धत्व के मार्ग पर चलने की कोशिश चल रही हैं। पंचशील, अष्टशील तथा दसशीलों पर आधारित जीवन शैली का उपयोग करके लोग शांति और सुख महसूस कर रहे हैं।

वर्धा जिले में अनेक महान लोगों का अस्तित्व रहा हैं। *आजनसरा के भोजाजी महाराज, खरांगणा के तुकडोजी महाराज के शिष्य केशवदास रामटेके, काचनूर के जो मंगलूर दस्तगीर में रहते थे वे गणपती महाराज से यह जिला पुनित हुआ हैं। इन लोगों ने जातिवाद के विरोध में कार्य किया, लेकिन उनका*

इतिहास विरोधीयों ने दबा दिया।[4] कहीं कहीं गांव में कबीर पंथ का प्रभाव, कहीं पर तुकाराम महाराज, तुकडोजी महाराज, गाडगे महाराज और कहीं पर बौद्ध धर्म का प्रभाव दिखता हैं। तुकडोजी महाराज, गाडगे महाराज, सोपान महाराज वर्धा जिले में आकर प्रबोधन किया करते थे। तुकडोजी महाराज मंदीर में किसी देवी–देवता का फोटो नहीं रखते थे। किसी मंदीर में भी वे नहीं जाते थे। वे कहते थे– *'सबके लिए खुला है ये मंदीर हमारा।*[5] बौद्ध धर्म के पंडीत धर्मानंद कौसंबी सन् 1934 में सेवाग्राम में रूके थे। उन्होंने बौद्ध धर्म के प्रचार कार्य किया। बाबासाहब का तीन बार वर्धा में आना हुआ। बाबासाहब के महापरिनिर्वाण के बाद वर्धा जिले को डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायन ने बौद्ध धम्म का मार्गदर्शन किया। वे राष्ट्रभाषा प्रचार समिती हिन्दीनगर में रहते थे। उनके पश्चात उनके शिष्य बाबासाहब का हूबहू जीवंत चरित्र अपने वाणी से डॉ. मधुकर कासारे अंबेडकरी लोगों को मार्गदर्शन करते आ रहे हैं। केलझर के महास्थवीर सदानंद ने भिक्षु परंपरा रखकर वर्धा जिले में बौद्ध धम्म का प्रचार किया। वर्तमान में अन्य धार्मिक संस्थायें बौद्ध धर्म पर मार्गदर्शन करती आ रही हैं।

वर्धा जिला ऐतिहासिक दृष्टि से तीन प्रकार का महत्व रखता हैं। पहला महत्व यह है कि, अंग्रेजो के काल में *स्वतंत्रता संग्राम* के लिए वर्धा जिले की तहसील आष्टी में लोगों ने आंदोलन चलाया था। उस समय अंग्रेजो ने गोलीयॉ चलाकर आंदोलन दबाने की प्रयास किया था। उस आंदोलन में अनेक पिछड़ी जाति के लोग भी शामील हो गये थे। अंबेडकरी आंदोलन के सहभागी डोले गुरूजी को भी अंग्रेजो ने जेल भिजवा दिया था। शहीद हुये लोगों की याद के लिए आष्टी में हुतात्मा स्मारक बनाया गया हैं। सन् 1934 में महात्मा गांधी ने वर्धा से अंग्रेजो के विरोध में सेवाग्राम से आंदोलन की शुरूआत की थी। उनके साथ उद्योगपति जमनालाल बजाज थे। उन्होंने वर्धा में बहुत जगह खरीदकर कार्य को

---

[4] साक्षात्कार– डॉ. खंडारे, मास्टर कॉलोनी, वर्धा. दि. 12.01018, समय–10.00, मो.–8308755103.

[5] साक्षात्कार– डॉ. सचीन खेडीकर, सावंगी मेघे, वर्धा. दि. 12.10.18, समय–10.30, मो.–9960612519.

आगे बढ़ाया। उस समय भवन के उद्‌घाटन के लिए राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद सेवाग्राम आये थे और वहीं पर रूके थे। पवनार में भी विनोबा भावे ने भूदान आंदोलन चलाया था। उनसे मिलने के लिए श्रीमती इंदिरा गांधी ने भी भेट की थी।

वर्धा जिले का दूसरे प्रकार का ऐतिहासिक महत्व *बौद्ध धर्म* के लिए हैं। वर्धा जिले का नाम जागतिक नकाशे पर चला गया। केलझर से मिली हुयी बुद्ध मुर्ति चीन में लोयांग शहर के बुद्ध विहार में प्रतिष्ठापित की गई। केलझर, मनोहर धाम दत्तपुर और पवनार में सन् 1952 से उत्खनन करते वक्त बुद्ध रूप और बौद्ध अवशेष प्राप्त हुआ। इससे यह मालूम पड़ता है कि चक्रधर नगर करके वहॉ पर बौद्ध शहर अस्तित्व में था। वहॉ की मिली हुई मूर्ति पवनार आश्रम में मौजूद हैं।

तीसरा महत्व *बाबासाहेब डॉ. अंबेडकर* के कारण हैं। आंबेडकरी आंदोलन के लिए वर्धा से 80 कि.मी. नागपुर की दीक्षाभूमि एवं वर्धा जिले में बाबासाहब का पदस्पर्श महत्व रखता हैं। डॉ. अंबेडकर का पहला आगमन 1 मई 1936 में सेवाग्राम में हुआ था। दूसरी बार वे पुलगांव में 25 अपैल 1954 को बौद्ध विहार का शिलान्यास एवं सिद्धार्थ वाचनालय का उद्‌घाटन के लिए आये थे। तब उन्होंने बड़ी भीड को लाभान्वित किया था। तीसरी बार बाबासाहब चंद्रपुर के दीक्षा समारोह के बाद नागपुर लौटते समय 18 अक्तुबर को सेवाग्राम स्टेशन पर लोगो नें जोरदार स्वागत किया था।

अंबेडकरी आंदोलन का नेतृत्व करने के लिए अनेक शिक्षित युवा आगे आये। शिक्षित वर्ग नौकरी करके सांस्कृतिक प्रबोधन करते थे एवं अंबेडकरी समाजको मार्गदर्शन करते थे। सन् 1946 में अंबेडकरी आंदोलन की शुरूआत में वर्धा के जी. एस. मेश्राम, बी. एस. भोयर पुलगांव, एस. एम. नितनवरे नालवाडी,[6]

[6] गजभिये, संजय, समता सैनिक दल इतिहास और संघर्ष, सम्यक प्रकाशन, प्र. सं., दिल्ली : 2008. पृ.146

वर्धा के भागवत शित्रुजी बाभले, वेला के दसरथ पाटिल, आदि लोग 'समता सैनिक दल' के सदस्य के रूप में कार्य करते थे। तदनंतर आचार्य सूर्यकान्त भगत, आर. एस. भगत, बी. डी. भगत, तनयकुमार वाघमारे, डोले गुरूजी, महादेव लोखंडे, पांडुरंग गोसावी, बाबुलाल गणविर, पांडुरंग वाघमारे, धरमदास मेश्राम, डी. बी. पाटिल, आर. एम. पाटिल, नामदेव वानखेडे, जयदेव नारायने, कृष्णाजी वानखेडे, मधुकर बाभले, ए. पी. पखाले, विनोद भोयर, गंगाराम खैरकर, नत्थू उमरे, आदि का विशेष योगदान मिला हैं।

इस विषय के संदर्भ के लिए कुछ अंबेडकरी आंदोलन में सहभागियों का जीवन और कार्य की जानकारी प्राप्त करके यह प्रबंध तैयार किया हैं। शोधार्थी द्वारा इस विषय को पूरा न्याय देने की कोशीश की हैं। किसी कार्यकर्ता की मृत्यू होने से जानकारी मिलना कठिन हो गया था। उनके समय में कॅमेरा न होने के कारण फोटोग्राफ्स भी नहीं मिल पाये हैं। अंबेडकरी आंदोलन में सहभागी लोगों की खोज करते समय पता चला की अनेक लोगों का मृत्यु हुआ है, और कुछ लोग जीवित भी हैं। जैसी शोधाथी' द्वारा खोज बढ़ती जा रही, वैसे अनेक लोगों की महत्वपूर्ण जानकारी हासील हुई। अंबेडकरी आंदोलन में सहभागी एक दुसरे को उनके कार्य के प्रती जानते थे। कुछ महत्वपूर्ण बातों पर समान संदर्भ प्राप्त होकर जानकरी हासील हुई हैं। निम्नलिखित पॉच लोगों का अंबेडकरी आंदोलन में महत्वपूर्ण सहभाग रहा हैं। अलग–अलग क्षेत्र में उनकी विशेषता रही हैं। उनके संदर्भ में पॉच अध्याय बनाकर उनकी जीवनी, बाबासाहब डॉ. अंबेडकर का प्रत्यक्ष दर्शन और प्रभाव एवं उनका संपर्क, अंबेडकरी आंदोलन में समर्पन और उनका सामाजिक, शैक्षणिक, राजनीतिक, धार्मिक, व्यावसायिक योगदान और उनके जीवन में कैसा बदलाव आ गया यह जानकारी दी हैं।

प्रथम अध्याय में भागवत शित्रूजी बाभले का जीवन और कार्य की जानकारी दी हैं। अंबेडकरी आंदोलन के लिए बाभले का समर्पित व्यक्तित्व दिखाई

देता हैं। जब वे इन्टर पढ़ रहे थे तबसे उनका अंबेडकरी आंदोलन में प्रवेश हो या था। उसी समय लोगों में जागृति बढ़ाने के लिए उन्होंने 'सिद्धार्थ' नामक पाक्षिक शुरू किया था। साथ में 'प्रबुद्ध भारत' की भी एजेंसी लेकर डॉ. अंबेडकर के विचार लोगों तक पहुंचाते थे। सामाजिक कार्य की शुरूवात करके बच्चों की पढ़ाई के लिए सिद्धार्थ छात्रावास, स्कूल और वाचनालय, प्रिंटिंग प्रेस शुरू किये थे। सन् 1950 में कॉटन माकेट का कमरा और 1960 से भीमनगर स्वयं का घर वर्धा जिले का कार्यालय बना था। अनेक नेता उनके घर में महाराष्ट्र से आते थे। सन् 1950 से बाभले 'सिद्धार्थ' पाक्षिक में कार्य का वृत्तांत और बाबासाहब के भाषण प्रकाशित करते थे और जगह जगह भेजते थे। औरंगाबाद में मिलिंद कॉलेज के बोधि संस्था को भी पाक्षिक भेजते थे, उसके अंक बाबासाहब ने भी देखे थे। उस संस्था ने बड़ा संपादक समझकर उनको भाषण देने के लिए निमंत्रण दिया प्रिन्सिपल म. भी. चिटणीस के बाद दूसरा भाषण बाभले का और तीसरा बाबासाहब का हुआ था।

दूसरे प्रसंग में बाबासाहब भंडारा के चुनाव के लिए आ रहे थे। तब मौका देखकर सन् 1954 में पुलगांव बुद्ध विहार का शिलान्यास एवं सिद्धार्थ वाचनालय के उद्घाटन और चुनाव प्रचार के लिए फंड इकट्ठा करके उसकी थैली अर्पण के लिए बुलाया था। बाभले इस कार्यकम के प्रमुख थे। वर्धा में कॉटन मार्केट में रूक कर बाभले ने अपने हाथों से बाबासाहब को गन्ने का रस पिलाया था। 12 अक्तूबर 1956 में वर्धा से 5000 लोगों का पैदल मार्च नागपुर धर्मांतर के लिए ले गये थे। 14 और 15 तारीख 1956 को वे साथ में ही थे। 18 अक्तूबर 1956 में वर्धा पूर्व स्टेशनपर बाबासाहब का भव्य स्वागत किया था, औरंगाबाद में उनके साथ रहे थे। इस तरह से बाभले कई बार बाबासाहब डॉ. अंबेडकर के संपर्क में रहे थे। बाभले जी ने सामाजिक, शैक्षणिक, राजनीतिक और धार्मिक कार्य अपने संपूर्ण जीवन में किया हैं।

द्वितीय अध्याय में आचार्य सूर्यकान्त भगत का जीवन और कार्य की जानकारी दी हैं। अंबेडकरी आंदोलन के लिए आचार्य सूर्यकान्त का समर्पित जीवन रहा हैं। बचपन में ही उनको गाने का शौक था। 'प्रबुध्द भारत' के अंक गांव में आते थे तबसे बाबासाहब का नाम उन्होंने सुना था। उनको पता चला की बाबासाहब पुलगांव आ रहे, तब गांव के आसपास के लोगों को लेकर बाबासाहब का भाषण सुनने चले गये थे। समता सैनिक दल का वे बालसदस्य बनें थे। धर्मांतर के लिए नागपुर पहुंचकर, तीन दिन नागपुर में रहकर बाबासाहब को देखने का मौका मिला था। आचार्य सूर्यकान्त भगत लगातार दीक्षाभूमि मंच पर पंद्रह साल गाना पेश करते रहे। उनके हजारो की संख्या में गाने है और 300 तक पुस्तकें छपी हैं। आचार्य सूर्यकान्त भगत कवि व गायक के रूप में तो प्रसिद्ध रहे हैं। अभी–भी लगातार तीन घंटे का गाने से प्रबोधन करते हैं। आचार्य सूर्यकान्त भगत साहित्य क्षेत्र में भी पीछे नहीं रहे। उन्होंने त्रिपिटक की अनेक पुस्तकों का मराठी भाषा में अनुवाद करके त्रिपिटक साहित्य में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं। अभी–भी वे कुछ ना कुछ लिखते रहते हैं।

तृतीय अध्याय में महादेवराव लोखंडे का जीवन और कार्य की जानकारी दी गई हैं। अंबेडकरी आंदोलन के लिए महादेवराव का समर्पित जीवन रहा हैं। बचपन में ही उनको गाने और तबला और बांसुरी बजाने का शोक था। देहात में रहने से वे ज्यादा पढ़ नहीं पाये। बचपन में उनकी मां से कबीर के दोहे का परिणाम होने से वे धार्मीक स्वभाव के रहे हैं। पुलगांव के पास उनका गांव होने से बहुत सारे लोग पुलगांव की ओर निकले थे, वे भी निकल गये। छोटा बालक रहने से उनको बाबासाहब के शब्दों का कुछ पता नहीं चला लेकिन इतनी भीड़ देखकर वे प्रभावित हो गये की बाबासाहब कोई महान व्यक्ति हैं। तबसे उनका अंबेडकरी आंदोलन में प्रवेश हुआ। तबसे सामाजिक और बौद्ध धर्म के प्रति अपना जीवन समर्पित कर दिया। महादेवराव ने पुराने सभी दैववाद, कर्मकांड संस्कार छोड

दिये। वे उच्च धम्माचरण पर आरूढ़ हो गये। बौद्ध की सभी संस्कार विधि आत्मसात करके वे धम्मप्रचार में लगे रहे। उनके जीवन में जीवंत बौद्ध धर्म दिखाई देता, जब कोई भी व्यक्ति उनके संपर्क में आता वह प्रभावित हो जाता था।

सन् 1962 में वर्धा में कलेक्टर ऑफिस पर महामोर्चा निकाला गया था, उसमें दस मांग का निवेदन था की आर्थिक कमजोर लोगों को जमीन, व्यवसाय करने के लिए लोन आदि मांग थी। यह आंदोलन उस समय के सरकार ने दबाने की कोशिश की थी, इसलिए आंदोलनकारियों को तीन महीने की जेल भी हो गई थी, इसमें महादेवराव भी शामिल थे। आचार्य सेवाग्राम में आचार्य सूर्यकान्त भगत के साथ रहकर गुरू–शिष्य की जोडी निभा रहे। बुद्ध ने कहा था 'कल्याणमित्रता यही संपूर्ण धम्मजीवन' हैं।

चतुर्थ अध्याय में डोले गुरूजी का जीवन और कार्य की जानकारी दी गई हैं। भारत मैं अंग्रेजो के विरोध में सन् 1942 में आंदोलन छेडा गया था। इस आंदोलन में डोले गुरूजी सामील हो गये थे। उस समय उनको जेल जाना पडा, इसलिए वे स्वतंत्रता सेनानी भी हैं। भागवत शित्रूजी बाभले ने प्रबुद्ध भारत की एजेंसी शुरू की थी, और सिद्धार्थ जगत भी शुरू किया गया था। डोले गुरूजी ने यह जिम्मेदारी लेकर 'प्रबुद्ध भारत' और 'सिद्धार्थ' 'पाक्षिक' के अंक बाटते थे। तबसे उनका अंबेडकरी आंदोलन में प्रवेश हो गया।

वर्धा से धरमपेठ नागपुर में अंग्रेजी में बीएससी पढ़ने के लिए डोले गुरूजी चले गये थे। पढ़ाई में होशियार होने के कारण उनको तुरंत मिलिटरी डिफेन्स पूना में ऑफिसर की नौकरी मिल गई। शिक्षा प्राप्त करना यह प्रथम बाबासाहब का संदेश उनके द्वारा पूरा पालन हो गया था। लेकिन वे शांत नहीं

बैठे, जहॉ उनकी नौकरी थी उसी इलाके में उनका सामाजिक और धार्मिक कार्य चलते रहे।

पंचम अध्याय में नामदेवराव के बारे में बताया गया हैं। नामदेवराव ने बाबासाहब को पुलगांव एवं नागपुर में प्रत्यक्ष देखकर बहुत प्रभावित होकर अपने को अंबेडकरी आंदोलन में समर्पित कर दिया। सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक तथा धार्मिक कार्यो में वे अग्रसर रहे। हैं। उनके कार्य का मुख्य हेतु यह रहा की लोग व्यावसायिक बनकर लोगों का आर्थिक विकास हो। इसके लिए लोगों को लोन दिलवाकर और दुकाने खोलने के लिए रास्ते पर घर वाले लोगों को प्रेरित किया, ताकि बौद्धों का एक मार्केट बनें।

भागवत शित्रुजी बाभले और डोले गुरूजी का निधन हो चुका हैं। आचार्य आचार्य सूर्यकान्त भगत, महादेवराव लोखंडे और नामदेवराव वानखेडे जीवित हैं। उम्र ढलान पर जा रही हैं, लेकिन अभी–भी उनका अंबेडकरी आंदोलन को आगे बढ़ाने का कार्य शुरू हैं।